रविवार 12 दिसंबर, 2021

विषय — भगवान मनुष्य के संरक्षक हैं

स्वर्ण पाठ: भजन संहिता 27 : 11

"हे यहोवा, अपने मार्ग में मेरी अगुवाई कर, और मेरे द्रोहियों के कारण मुझ को चौरस रास्ते पर ले चल।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 27 : 1, 3-5, 8, 13, 14

1 यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ ठहरा
है, मैं किस का भय खाऊं?
3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूंगा; चाहे मेरे विरुद्ध लड़ाई ठन जाए, उस दशा
में भी मैं हियाव बान्धे निशचिंत रहूंगा॥
4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने
पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं॥
5 क्योंकि वह तो मुझे विपत्ति के दिन में अपने मण्डप में छिपा रखेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह
मुझे छिपा लेगा, और चट्टान पर चढ़ाएगा।
7 हे यहोवा, मेरा शब्द सुन, मैं पुकारता हूं, तू मुझ पर अनुग्रह कर और मुझे उत्तर दे।
8 तू ने कहा है, कि मेरे दर्शन के खोजी हो। इसलिये मेरा मन तुझ से कहता है, कि हे यहोवा, तेरे दर्शन
का मैं खोजी रहूंगा।
13 यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूंगा, तो मैं मूर्च्छित हो
जाता।
14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 36: 5, 6

5 हे यहोवा तेरी करूणा स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाश मण्डल तक पहुंची है।
6 तेरा धर्म ऊंचे पर्वतों के समान है, तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं; हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की
रक्षा करता है॥

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. भजन संहिता 55 : 22

22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा॥

3. निर्गमन 17: 1-6, 8-13

1 फिर इस्राएलियों की सारी मण्डली सीन नाम जंगल से निकल चली, और यहोवा के आज्ञानुसार कूच करके
रपीदीम में अपने डेरे खड़े किए; और वहां उन लोगों को पीने का पानी न मिला।
2 इसलिये वे मूसा से वादविवाद करके कहने लगे, कि हमें पीने का पानी दे। मूसा ने उन से कहा, तुम मुझ से
क्यों वादविवाद करते हो? और यहोवा की परीक्षा क्यों करते हो?
3 फिर वहां लोगों को पानी की प्यास लगी तब वे यह कहकर मूसा पर बुड़बुड़ाने लगे, कि तू हमें लड़के
बालोंऔर पशुओं समेत प्यासों मार डालने के लिये मिस्र से क्यों ले आया है?
4 तब मूसा ने यहोवा की दोहाई दी, और कहा, इन लोगों से मैं क्या करूं? ये सब मुझे पत्थरवाह करने को
तैयार हैं।
5 यहोवा ने मूसा से कहा, इस्राएल के वृद्ध लोगों में से कुछ को अपने साथ ले ले; और जिस लाठी से तू ने
नील नदी पर मारा था, उसे अपने हाथ में ले कर लोगों के आगे बढ़ चल।
6 देख मैं तेरे आगे चलकर होरेब पहाड़ की एक चट्टान पर खड़ा रहूंगा; और तू उस चट्टान पर मारना, तब
उस में से पानी निकलेगा जिससे ये लोग पीएं। तब मूसा ने इस्राएल के वृद्ध लोगों के देखते वैसा ही किया।
8 तब अमालेकी आकर रपीदीम में इस्राएलियों से लड़ने लगे।
9 तब मूसा ने यहोशू से कहा, हमारे लिये कई एक पुरूषों को चुनकर छांट ले, ओर बाहर जा कर
अमालेकियों से लड़; और मैं कल परमेश्वर की लाठी हाथ में लिये हुए पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा।
10 मूसा की इस आज्ञा के अनुसार यहोशू अमालेकियों से लड़ने लगा; और मूसा, हारून, और हूर पहाड़ी की
चोटी पर चढ़ गए।
11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब तक तो इस्राएल प्रबल होता था; परन्तु जब जब वह
उसे नीचे करता तब तब अमालेक प्रबल होता था।
12 और जब मूसा के हाथ भर गए, तब उन्होंने एक पत्थर ले कर मूसा के नीचे रख दिया, और वह उस पर
बैठ गया, और हारून और हूर एक एक अलंग में उसके हाथों को सम्भाले रहें; और उसके हाथ सूर्यास्त
तक स्थिर रहे।
13 और यहोशू ने अनुचरों समेत अमालेकियों को तलवार के बल से हरा दिया।

4. व्यवस्थाविवरण 34 : 7

7 मूसा अपनी मृत्यु के समय एक सौ बीस वर्ष का था; परन्तु न तो उसकी आंखें धुंधली पड़ीं, और न उसका
पौरूष घटा था।

5. 2 शमूएल 22 : 33-35, 37, 40 (*से* :), 50

33 यह वही ईश्वर है, जो मेरा अति दृढ़ क़िला है, वह खरे मनुष्य को अपने मार्ग में लिए चलता है।
34 वह मेरे पैरों को हरिणियों के से बना देता है, और मुझे ऊंचे स्थानों पर खड़ा करता है।
35 वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है, यहां तक कि मेरी बांहें पीतल के धनुष को झुका देती हैं।
37 तू मेरे पैरों के लिये स्थान चौड़ा करता है, और मेरे पैर नहीं फिसले।
40 और तू ने युद्ध के लिये मेरी कमर बलवन्त की।
50 इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।

6. मत्ती 4: 23, 24

23 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बल्ता को दूर करता रहा।
24 और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

7. मत्ती 5: 1, 2

1 वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।
2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा,

8. मत्ती 11: 28-30

28 हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।
30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है॥

9. प्रेरितों के काम 9: 36-41

36 याफा में तबीता अर्थात दोरकास नाम एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुतेरे भले भले काम और दान किया करती थी।
37 उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहला कर अटारी पर रख दिया।
38 और इसलिये कि लुद्दा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहां है दो मनुष्य भेजकर उस ने बिनती की कि हमारे पास आने में देर न कर।

39 तब पतरस उठकर उन के साथ हो लिया, और जब पहुंच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए; और सब विधवाएं रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुई: और जो कुरते और कपड़े दोरकास ने उन के साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं।
40 तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और लोथ की ओर देखकर कहा; हे तबीता उठ: तब उस ने अपनी आंखे खोल दी; और पतरस को देखकर उठ बैठी।
41 उस ने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया।

10. प्रकाशित वाक्य 92 : 4 (तुम), 12-14

4 ... हे यहोवा, तू ने मुझ को अपने काम से आनन्दित किया है; और मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयजयकार करूंगा॥
12 धर्मी लोग खजूर की नाईं फूले फलेंगे, और लबानोन के देवदार की नाईं बढ़ते रहेंगे।
13 वे यहोवा के भवन में रोपे जा कर, हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले फलेंगे।
14 वे पुराने होने पर भी फलते रहेंगे, और रस भरे और लहलहाते रहेंगे,

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 387 : 27-32

ईसाइयत का इतिहास अपने स्वर्गीय पिता, सर्वशक्तिमान मन, द्वारा मनुष्य पर समर्थित शक्ति और रक्षा शक्ति के उदात्त प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो मनुष्य को विश्वास और समझ प्रदान करता है जिससे वह खुद का बचाव करता है, न केवल प्रलोभन से, बल्कि शारीरिक पीड़ा से।

2. 5 : 16 (भगवान)-18

भगवान अपने प्यार की दौलत को समझ और प्यार में डालते हैं, जिससे हमें अपने दिन के मुताबिक ताकत मिलती है।

3. 407 : 11 (ईसाई)-16

यहाँ क्राइस्टियन साइंस, प्रभु की रामबाण औषधि है, जो नश्वर मन की कमजोरी को ताकत देती है, - अमर और सर्वशक्तिमान दिमाग से ताकत, - और आध्यात्मिकता और खुद को मनुष्य से ऊपर उठाकर मानवता को शुद्ध इच्छाओं में, और यहां तक कि मनुष्य के लिए भी।

4. 80 : 1-3

हमारे पास सत्य के बारे में हमारी आशंका के अनुपात में ताकत है, और सच्चाई को प्रदर्शन देने से हमारी ताकत कम नहीं है।

5. 485 : 30-3

यह कहना कि ताकत पदार्थ में है, यह कहने के समान है कि शक्ति लीवर में है। पदार्थ में किसी भी जीवन या बुद्धि की धारणा वास्तव में आधारहीन है, और जब आपने असत्य के वास्तविक स्वरूप को जान लिया है, तो आप असत्य में विश्वास नहीं कर सकते।

6. 198 : 29-14

चूंकि लोहार की बांह की मांसपेशियां बहुत विकसित होती हैं, इसलिए इसका मतलब यह नहीं है कि व्यायाम ने यह परिणाम दिया है या कम इस्तेमाल किया जाने वाला हाथ कमजोर होना चाहिए। यदि कर्म का कारण पदार्थ होता, और यदि मांसपेशियाँ, नश्वर मन की इच्छा के बिना, हथौड़े को उठा सकती हैं और निहाई पर प्रहार कर सकती हैं, तो यह सच माना जा सकता है कि हथौड़े से मांसपेशियों का विस्तार होगा। ट्रिप-हैमर व्यायाम से आकार में नहीं बढ़ता है। क्यों नहीं, क्योंकि मांसपेशियाँ लकड़ी और लोहे के समान पदार्थ हैं? क्योंकि कोई नहीं मानता कि मन हथौड़े पर ऐसा परिणाम पैदा कर रहा है।

मांसपेशियां स्व-अभिनय नहीं कर रही हैं। यदि मन उन्हें नहीं हिलाता, तो वे गतिहीन होते हैं। इसलिए महान तथ्य यह है कि केवल मन ही अपने जनादेश के माध्यम से मनुष्य को शक्ति की मांग और आपूर्ति के कारण बढ़ाता और सशक्त बनाता है। मांसपेशियों के व्यायाम के कारण नहीं, बल्कि लोहार के व्यायाम में विश्वास के कारण उसका हाथ मजबूत हो जाता है।

7. 217 : 24-8

थकान का वैज्ञानिक और स्थायी उपाय शरीर पर मन की शक्ति या शारीरिक थकान के किसी भी भ्रम को सीखना है, और इस भ्रम को नष्ट करना है, क्योंकि पदार्थ थका हुआ और भारी नहीं हो सकता।

आप कहते हैं, "कठिन मुझे थका देती है।" लेकिन यह मैं क्या हूँ? यह मांसपेशी है या दिमाग? कौन थक गया है और इसलिए बोलता है? क्या मन के बिना मांसपेशियां थक सकती हैं? क्या मांसपेशियां बात करती हैं, या आप उनके लिए बात करते हैं? सामग्री गैर-बुद्धिमान है। नश्वर मन झूठी बातें करता है, और जो थकावट की पुष्टि करता है, उसने वह थकावट बना दी है।

तुम यह नहीं कहते कि एक पहिया थका हुआ है; और फिर भी शरीर पहिए के समान भौतिक है। यदि मानव मन शरीर के बारे में जो कहता है, उसके लिए यह न होता, तो शरीर, निर्जीव चक्र की तरह, कभी थकता नहीं। सत्य की चेतना हमें अचेतन अवस्था में घंटों से अधिक विश्राम देती है।

8. 385 : 1-18

यह कहावत है कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल और मानवीय श्रम में लगे अन्य परोपकारी लोग बिना थके हुए थकान और जोखिम से गुजरने में सक्षम हैं, जिसे आम लोग सहन नहीं कर सकते। स्पष्टीकरण उस समर्थन में निहित है जो उन्होंने मानव से ऊपर उठकर दैवीय कानून से प्राप्त किया था। आध्यात्मिक मांग, सामग्री को दबाती है, ऊर्जा और सहनशक्ति की आपूर्ति करती है जो अन्य सभी सहायता से अधिक होती है, और उस दंड को रोकता है जो हमारे विश्वास हमारे सर्वोत्तम कर्मों से जुड़ा होगा। हमें याद रखना चाहिए कि अधिकार का शाश्वत नियम, हालांकि यह उस कानून को कभी भी रद्द नहीं कर सकता है जो पाप को अपना जल्लाद बनाता है, मनुष्य को सभी दंडों से छूट देता है, लेकिन गलत काम करने के कारण।

निरंतर परिश्रम, अभाव, जोखिम, और सभी अप्रिय स्थितियां, यदि पाप के बिना, बिना कष्ट के अनुभव की जा सकती हैं। जो भी करना आपका कर्तव्य है, आप खुद को नुकसान पहुंचाए बिना कर सकते हैं।

9. 384 : 3-12

हमें अपने मन को इस निराशाजनक विचार से मुक्त करना चाहिए कि हमने एक भौतिक कानून का उल्लंघन किया है और अनिवार्य रूप से दंड का भुगतान करना चाहिए। आइए हम अपने आप को प्रेम के नियम से आश्वस्त करें। ईश्वर मनुष्य को कभी भी सही काम करने, ईमानदार श्रम या दयालुता के कार्यों के लिए दंडित नहीं करता है, हालांकि वे उसे थकान, ठंड, गर्मी, संक्रमण के लिए उजागर करते हैं। यदि मनुष्य को पदार्थ के माध्यम से दंड भुगतना पड़ता है, तो यह नश्वर मन का विश्वास है, ज्ञान का अधिनियम नहीं है, और मनुष्य को इस विश्वास को रद्द करने के लिए केवल अपना विरोध दर्ज करना होगा।

10. 376 : 13 (वहां)-16

... एक अच्छे मकसद और कार्य में अधिक जीवन और अमरता है, उस सभी रक्त की तुलना में जो कभी नश्वर नसों से बहता है और जीवन की एक भौतिक भावना का अनुकरण करता है।

11. 387 : 8 (कब)-12

... जब हमें पता चलता है कि अमर मन कभी सक्रिय है, और यह कि आध्यात्मिक ऊर्जा न तो बाहर पहन सकती है और न ही ईश्वर प्रदत्त शक्तियों और संसाधनों पर तथाकथित भौतिक कानून को लागू कर सकती है, हम सत्य में आराम करने में सक्षम हैं, अमरता के आश्वासन से ताज़ा, मृत्यु दर के विरोध में।

12. 167 : 6-10

हम जीवन को दैवीय विज्ञान में तभी ग्रहण करते हैं जब हम भौतिक बोध से ऊपर रहते हैं और उसे ठीक करते हैं। अच्छाई या बुराई के दावों की हमारी आनुपातिक स्वीकृति हमारे अस्तित्व के सामंजस्य को निर्धारित करती है, - हमारा स्वास्थ्य, हमारी लंबी उम्र और हमारी ईसाई धर्म।

13. 392 : 27-32

जब स्थिति मौजूद होती है, जिसे आप कहते हैं कि बीमारी को प्रेरित करता है, चाहे वह हवा, व्यायाम, आनुवंशिकता, छूत या दुर्घटना हो, तो अपने कार्यालय को कुली के रूप में प्रदर्शन करें और इन अस्वास्थ्यकर विचारों और भय को बंद करें। नश्वर मन से अपमानजनक त्रुटियों को बाहर करें; तब शरीर उनसे पीड़ित नहीं हो सकता।

14. 393 : 8-15

मन शारीरिक इंद्रियों का स्वामी है, और बीमारी, पाप और मृत्यु को जीत सकता है। इस ईश्वर प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करें। अपने शरीर पर अधिकार कर लो, और उसकी भावना और कार्य को नियंत्रित करो। आत्मा के सामर्थ्य में वृद्धि का विरोध करना अच्छा है। ईश्वर ने मनुष्य को इसके लिए सक्षम बनाया है, और कुछ भी मनुष्य में दिव्य रूप से दी गई क्षमता और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6